प्रातः क्लास ओम् शांति शिवबाबा याद है? 16/2/68

ओमशान्ति। मीठे–2, सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। पढ़ाते भी हैं, समझाते भी हैं। पढ़ाते हैं रचना और रचता के आदि,मध्य,अंत का राज़ और समझाते हैं सर्वगुण सम्पन्न बनो, दैवीगुण धारण करो। याद करते हैं फिर हम सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम जानते हो इस समय यह तमोप्रधान सृष्टि है। सतोप्रधान सृष्टि थी सो 5000 वर्ष बाद फिर अभी तमोप्रधान बनी है। यह है पुरानी दुनिया। सभी के लिए कहेंगे ना। वा तो नई दुनिया में थे वा शांतिधाम में थे। तो बाप रूहों को ही बैठ सम(झाते) हैं। हे रूहानी बच्चों! अब अपन को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। सतोप्रधान ज़रूर बनना है। बाप को याद करना है, बाप से ही वर्सा लेना है। लौकिक बच्चे भी याद करते हैं ना। जितना बड़े होते जाते हैं हद के वर्सा पाने हकदार बनते जाते हैं। तुम तो हो बेहद के बाप के बच्चे। बाप से बेहद का वर्सा लेना है। अभी भक्ति आदि करने की दरकार नहीं। यह तो बच्चे समझ गए हैं यह विश्व की युनिवर्सिटी है। सभी मनुष्य मात्र को पार पहुँचाना है। बेहद की .... धारण करनी है। जो अभी तमोप्रधान हैं सो फिर सतोप्रधान होंगे। बच्चे जानते हैं इस समय हम बेहद के बाप से बेहद के सुख का वर्सा ले रहे हैं। लौकिक संबंधियों से कुछ न पढ़ना है, न उनके मत पर चलना है। एक ही मत पर चलना है। इस याद की यात्रा से ही तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान हो जाती है। सतोप्रधान बनना है ज़रूर। फिर सतोप्रधान दुनिया में भी जाना है। तुम्हारे समझ में आता है हम ब्राह्मण हैं। हम बाप के बने हैं। पढ़ रहे हैं। अभी भक्ति नहीं करनी है। पढ़ना है। पढ़ने को ज्ञान कहा जाता है। भक्ति अलग है। बेहद का बाप ज्ञान ही सुनाते हैं तुम ब्राह्मणों को। और किसी को पता नहीं है कि ज्ञान का सागर बाप जो टीचर भी है वह कैसे पढ़ाते हैं। बाबा टॉपिक्स तो बहुत ही समझाते रहते हैं। नम्बरवन बात है बाप का बनकर बाप का नाम बाला करने। सम्पूर्ण पवित्र भी बनना है। सम्पूर्ण मीठा भी बनना है। यह है ही ईश्वरीय विद्या। भगवान बैठ पढ़ाई है। उस ऊँच ते ऊँच बाप को याद करना है। है तो सेकेण्ड की बात। अपन को आत्मा समझो। जानते हो हम आत्माएँ शांतिधाम में निवास करती हैं। फिर आते हैं यहाँ पार्ट बजाने। पार्ट तो बुद्धि बैठ गया है। पुनर्जन्म में आते ही रहते हैं। नम्बरवार 84 जन्मों का पार्ट अभी हमने पूरा किया है। इस पढ़ाई को भी समझना है। पार्ट को भी समझना है। ड्रामा का राज़ भी बुद्धि में है। जानते हो यह हमारा अन्तिम जन्म है। इसमें बाप मिला है। जब 84 जन्म पूरी करते हैं तो फिर पुरानी दुनिया बदलती है। तुम अभी इस बेहद के ड्रामा को, 84 जन्मों को, इस पढ़ाई को जानते हो। 84 जन्म लेते–2 अभी पिछाड़ी के जन्म में आए हो। अभी हम पढ़ रहे हैं, नई दुनिया में जावेंगे। नए–2 भी आते रहेंगे। कुछ न कुछ निश्चय होता रहता है। कोई तो इस पढ़ाई में लग ही जाते हैं। बुद्धि में है हम याद की यात्रा से सतोप्रधान बन रहे हैं। हम पवित्र बनते–2 उन्नति को पाते रहेंगे। बाप ने समझाया है तुम जितना याद करते हो, तुम्हारी आत्मा पवित्र बनती जाती है। बच्चों की बुद्धि में सारा ड्रामा बैठा हुआ है। यह भी जानते हो इस दुनिया के सब कुछ छोड़ कर आए। जो इन आँखों से देखते हो वह फिर देखने का है नहीं। यह सब खत्म हो जाने वाला है। बाप कहते हैं तुम पार्ट बजाते–2 पुनर्जन्म लेते आए हो। अभी तुम्हारा यह अन्तिम जन्म है। और कोई भी इस बेहद के ड्रामा को नहीं जानते हैं। तुम ही जानते हो। रचता और रचना के 84 जन्मों का सारा चक्र बुद्धि में है। 84 जन्म लेते–2 अभी हम तमोप्रधान बने हैं। फिर बाप आए हैं सतोप्रधान बनाने। जैसे वह इम्तहान ....12 मास का हुई है। बहुत चीज़ें याद आती रहती हैं। फिर पक्का हो जावेगा। हम आत्माएँ नंगे आए थे। शरीर था नहीं। मित्र–संबंधी आदि कुछ नहीं थे। आत्मा शरीर से अलग हो जाती है तो फिर कोई संबंध नहीं रहता है। गर्भ में जाते हैं तो भी पता नहीं रहता। दूसरे जानते हैं इनके पेट में गर्भ है। कोई आत्मा ने शरीर धारण किया है। फिर जितना बड़ा होता जाता है समझ जाते हैं। अभी तुम सारी दुनिया के मनुष्य मात्र के इस पार्ट को (अधूरी मुरली)